यह सुरक्षित है

केवल कुरआन ही वह पवित्र पुस्तक है जो लम्बे समय से पढ़ी और पढ़ाई जा रही है और जब से (१४०० साल पूर्व) इसका अवतरण हुआ है तब से आज तक यह अपनी मूल भाषा अरबी में ज्यों की त्यों सुरक्षित और शुद्ध है। इसमे कुछ भी न बढ़ाया गया है और न कुछ घटाया गया है , इस तरह यह पुस्तक ग़लतियों और विरोधाभासों से पूरी तरह सुरक्षित है।

वैज्ञानिक चमत्कार

कुरआन 7 वीं शताब्दी में अवतरित हुआ और इसमे बहुत-से ऐसे वैज्ञानिक तथ्य मौजूद हैं जिनसे उस समय के लोग बिल्कुल अनभिज्ञ थे और जिनको आज के समय की आधुनिक टैक्नालाजी का प्रयोग करके खोजा गया है उनमें से कुछ के उदाहरण ये है :

सभी जीवधारियों की उत्पत्ति पानी से हुई है। (कुरआन, 21 : 30)

कायनात का विस्तार हो रहा है। (कुरआन, 51 : 47)

सुर्य और चन्द्रमाँ अपने-अपने कक्ष में तैर रहे हैं। (कुरआन, 21 :33)

मानव-भ्रूण का विस्तुत विवरण। (कुरआन, 23 : 12 -14)

ऐतिहासिक चमत्कार और भविष्यवाणियाँ

कुरआन इतिहास के आधार पर भी खरा उतरता है। उदाहरण के लिए 19 वीं शताब्दी में मिस्री चित्रलिपि (Hieroglyphics) की डीकोडिंग किए जाने से पहले 'हामान' नाम को कोई नहीं जानता था। इस डीकोडिंग से पता चलता है कि हामान फ़िरऔन के दरबार में निर्माण कार्य करनेवाले कर्मचारियों का हैड था। यह तथ्य कुरआन (28:38) के अन्दर 1400 साल पहले दर्ज कर दिया गया था और मुहम्मद (स) और उनके साथी इसके बारे में जानते थे।

भविष्य में होनेवाली बहुत-सी घटनाएँ ऐसी हैं जिनकी भविष्यवाणी कुरआन में की गई और बाद में वे सब की सब पूरी हुई, जैसे कि कुरआन में कहा गया की फ़िरऔन के शरीर को क़ियामत तक के लिए सुरक्षित कर दिया जाएगा (कुरआन 10:91-92) मिस्र के क़ाहिरा के म्यूज़ियम में ममी करके रखा हुआ फ़िरऔन का शरीर सबके लिए एक प्रमाण है।

अनुपम शैलि और सार्वभौमिक संदेश

कुरआन की शिक्षा है कि तमाम इनसानों को इस बात का पूर्ण अवसर प्राप्त है कि वे बिना किसी जाति. स्तर और लिंग के भेदभाव के एक अकेले ख़ुदा की बन्दगी करें।

क़ुरआन की अनुपम शैली और उसका सन्देश इस बात का प्रमाण है कि वह ईश्वर की ओर से है। यह शिक्षा देता है कि सृष्टा केवल एक है जिसका स्वभाव अपनी सृष्टी (रचना) से भिन्न है। इस धारणा में कुरआन किसी प्रकार का समझौता या विकृति नहीं करता। यही धारण ख़ुदा के बारे में मनुष्य की जन्मजात धारणा का समर्थन करती है।

मैं यहाँ क्यों आया हूँ?

प्रत्येक इस बात को जानता है कि हमारे शरीर के अंगों, जैसे कि हमारी आँखें, कान, दिल और दिमाग़ आदि का एक उद्देश्य है?

प्रज्ञावान ईश्वर ने हमे यूँ ही बेमक़सद घूमने या केवल अपनी नैसर्गिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए नहीं पैदा किया है। बल्कि हमारे पैदा किए जाने का एक उच्च उद्देश्य है , और वह है एक अकेले ख़ुदा को पहचानना और उसकी बन्दगी करना ताकि हम अपने पैदा करनेवाले ख़ुदा के मार्गदर्शन के अनुसार एक सफल और सुखी जीवन व्यतीत कर सकें। इस बन्दगी में हमारे व्यक्तिगत नेक काम भी शामिल हैं जैसे नमाज़ और दुआएँ इत्यादि और समाज कल्याण के काम भी जैसे एक अच्छा पड़ोसी बनकर रहना,अपने परिवार का भरण-पोषण करना, ईमानदारी और यहाँ तक कि जानवरों से प्रेम करना भी इसमें शामिल है।

ईश्वर हमें आज्ञा देता है कि ख़ुदा के सिवाय किसी अन्य (जैसे मूर्ति, सूरज, चाँद, साधु-सन्त या नबी-औलिया आदि) की बन्दगी न की जाए। वह कहता है कि ईश्वर को किसी साझीदार, Partner या मध्यस्थ की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई भी व्यक्ति उससे कभी भी सीधे तौर पर, Direct उससे सम्बन्ध स्थापित कर सकता है और उसकी पूजा - उपासना कर सकता है।

ईश्वर कहता है कि यह जीवन एक परिक्षा है और विभिन्न तरीक़ों से लोगों की यहाँ परीक्षा ली जा रही है। हमारे साथ जो कुछ घटित होता है हम पर उसका कोई नियन्त्रण नहीं है। हाँ इस पर हमारा नियन्त्रण है कि हम उस पर प्रतिक्रिया किस तरह करते हैं।विपरीत परिस्थितियों में सब्र और धैर्य से काम लेना और नेमतों तथा अनुकम्पाओं पर शुक्र (कृतज्ञता) करना इनसान को ख़ुदा के क़रीब करता है और हमेशा की जन्नत हासिल करने का ज़रिया है। हमें इस बात से भी सचेत किया जाता है कि यदि हम ख़ुदा का इनकार करते हैं और उसके आदेशों की अवहेलना करते हैं तो भयानक सज़ा के तौर पर नरक मिलेगी।

तो ..... मुझे अब क्या करना है?

किसी भी इनसान के ईमान और निष्ठा की परिक्षा इस बात में है कि वह ईश्वर की निशानियों को देखे और उन पर ग़ौर-फ़िक्र (चिन्तन-मनन)करे तथा उसके मार्गदर्शन के अनुसार जीवन व्यतीत करें। यह तभी हो सकता है जब ईश्वर के आदेशों के आगे समर्पण कर दिया जाए, जिसे अरबी भाषा में 'अल्लाह' कहते हैं ने इस्लाम को सबके लिए स्वीकार्य बनाया है चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि या स्तर का व्यक्ति हो। इसलिए कोई भी व्यक्ति मुस्लिम बन सकता है, यदि वह इस बात पर ईमान (आस्था) की गवाही दे कि-''मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूजा-उपासना के योग्य नहीं हैं और मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर (दूत) है।''

क्या अभी आपके लिए वह समय नहीं आया कि सत्य के समक्ष समर्पण करके और अपने मालिक को पहचानकर अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करें।

हमसे सम्पर्क करें

इस्लामिक इनफ़ॉरमेशन सेंटर

IIC

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

जीवन का उद्देश्य क्या है?

मैं कहाँ से आया हूँ?
क्यों आया हूँ ?
मुझे कहाँ जाना है ?

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें

Toll Free 1800 572 3000

040 - 6832 7832

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath

जीवन का उद्देश्य क्या है?

कल्पना करो कि आप किसी रेगिस्तान में घूम रहे हैं! वहाँ आपको एक मोबाइल फ़ोन मिल जाता है . . . .हम जानते हैं कि फ़ोन काँच, प्लास्टिक और लोहे से मिलकर बना होता है। काँच रेत से बनता है, प्लास्टिक तेल से और लोहा जमीन के अन्दर से निकाला जाता है। ये सभी चीजें रेगिस्तान के सामाग्री हैं,अर्थात ये सब चीजें यहाँ उपलब्ध होती हैं। क्या आप यक़ीन कर लेंगे कि वह फ़ोन, जोआपको मिला है, स्वयं बन गया? कि सूरज निकला, हवा चली, बिजली तडकी, तेल उबल कर ऊपर कि ओर आया और रेत तथा लोहा मिश्रित हुए और करोडों साल के बाद बस यूँ ही अचानक फ़ोन बन गया।

स्पष्ट है कि इस व्याख्या पर कोई भी यक़ीन नहीं करेगा। मोबाइल फ़ोन स्पष्ट रूप से एक ऐसी चीज है जिसको बाक़ायदा तरीके से डिजाइन किया गया और बनाया गया है, तो यही बात वास्तव में बुद्धिसंगत है कि इसका कोई बनानेवाला अवश्य होगा। इसी तरीके से जब हम इस विश्व की व्यवस्था और विधि-विधान को देखते हैं तो क्या यह बात बुद्धिसंगत नहीं है कि इस बात पर यक़ीन किया जाए कि इस का बनानेवाला भी कोई है।

स्पष्ट है कि इस व्याख्या पर कोई भी यक़ीन नहीं करेगा। मोबाइल फ़ोन स्पष्ट रूप से एक ऐसी चीज़ है जिसको बाक़ायदा तरीक़े से डिज़ाइन किया गया और बनाया गया है, तो यही बात वास्तव में बुध्दिसंगत है कि इसका कोई बनानेवाला अवश्य होगा।

जगत की उत्पत्ति

मानव अनुभव हमें यह बताता है कि कोई भी चीज अनस्तित्व से अस्तित्व में नहीं आती। यही बात बुद्धिसंगत है कि हर आरम्भ का कारण होता है; यानी हर चीज का कोई न कोई बनानेवाला होता है। फिर यह भी कि अव्यवस्था से कोई व्यवस्था स्वतः उत्पन्न नहीं होती। इसलिए इस बात पर विश्वास रखना अत्यन्त बुद्धिसंगत है कि इस विश्व का आरम्भ है और अवश्य ही कोई बुद्धिमान इसका बनानेवाला है।

अब सवाल यह है कि यदि इस विश्व का कोई बनानेवाला है तो उस का बनानेवाला कौन है? और फिर उस बनानेवाले का बनानेवाला कौन है? . . . लेकिन हम इसे अनन्त तक नहीं ले जा सकते, पहले बनानेवाले पर ही खत्म कर देना चाहिए। इस पहले बनानेवाले का निश्चित रूप से कोई बनानेवाला नहीं है और इसलिए वह हमेशा से मौजूद है।

इस बात से हम नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि कायनात के इस 'पहले बनानेवाले (First Cause) को बहुत ही शक्तिशाली और बुद्धिमान होना चाहिए,क्योंकि वही इसको अस्तित्व में लाया और इसके चलाने के लिए वैज्ञानिक नियम भी उसी ने बनाया है। इसके अतिरिक्त इस 'पहले बनानेवाले को देश और काल से परे (Timeless and Spaceless) होना चाहिए, क्योंकि देश, काल और पदार्थ (Matter) कायनात के अस्तित्व में आने पर पैदा हुए।

'पहले बनानेवाले के ये सारे गुण ईश्वर की धारणा का आधार बनते हैं।ईश्वर कायनात को बनानेवाला वह पहला कारण है , जिसे किसी ने पैदा नहीं किया। वह एक है, और असीम है, क्योंकि वह किसी की सृष्टि नहीं।

विश्व का सम्पूर्ण सन्तुलन

इस कायनात में बहुत सी विशेषताएँ ऐसी हैं जो इस बात का संकेत देती हैं कि मानव-जीवन की सहायता(Support) के लिए इसे विशेष रूप से बनाया गया है। जैसे धरती से सूर्य की दूरी, धरती के बाहरी परत की मोटाई, वह चाल जिस पर धरती घूमती है , वातावरण में आक्सीजन की उपयुक्त मात्रा , यहाँ तक कि वह कोण जिस पर धरती झुकी हुई है। इनके बीच की उचित दुरी और माप जो इस समय है यदि इनमें थोड़ा भी बदलाव आ जाए तो जीवन का अस्तित्व असम्भव है । प्राकृतिक सन्तुलन, विधान और व्यवस्था ये सब किसी शक्तिशाली सृष्टा की बुद्धिमत्तापूर्ण डिज़ाइन की ओर संकेत करते हैं ।

सृष्टा सृष्टि से भिन्न है

क्या इनसान खुदा हो सकता है?

कुछ लोगों का विश्वास है कि इनसान ख़ुदा बन गया। ख़ुदा के कुछ गुण और विशेषताएँ हैं , जैसे कि वह सर्वज्ञाता (सब कुछ जाननेवाला) है , सर्वशक्तिमान और हमेशा जीवित रहनेवाला है। जबकि इनसान में ये विशेषताएँ नहीं पाई जातीं। इनसान का ज्ञान और शक्ति सीमित है और वह ईश्वर है। (तनिक विचार करें कि) यह कैसे सम्भव है कि किसी चीज़ में एक ही समय में दो विरोधी विशेषताएँ हों ? निशिचत रूप से यह बात बुद्धिसंगत नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि '' जब ईश्वर सब कुछ कर सकता है, तो वह इनसान क्यों नहीं बन सकता। ख़ुदा की विशेष्ताएँ पूर्ण हैं और यह उसके स्वभाव से इतर है कि वह कोई ऐसा काम करे जिसमें कोई दोष हो। निश्चित रुप से ईश्वर कोई अनीश्वरीय कार्य नहीं करता - बिल्कुल यही बात इन सवालों के बारे में भी कही जा सकती है। ज़रा सोचिए कि '' क्या ईश्वर वुजूद में आने से रुक सकता है'' क्या ईश्वर शैतान बन सकता है ? यह सब व्यर्द प्रश्न हैं।

क्योंकि इसका मतलब यह होगा कि वह अब ईश्वर नहीं रहा।

क्या बहुत से ख़ुदा होसक्ते हैं?

यदि एक से अधिक ख़ुदा होते तो इसका मतलब होता कि उसकी शक्ति और अधिकार में त्रुटि और कमी है। क्योंकि इस तरह ख़ुदा के प्रतिद्वंद्वी हो जाते और उसे उनके साथ समझौते करने पड़ते। इससे कायनात के अन्दर भ्रम, अस्तव्यस्ता और अन्धव्यवस्था उत्पन्न हो जाती ? जबकि हम इस कायनात में सम्पूर्ण सामंजस्य पाते हैं , इसलिए निश्चित रूप से इस कायनात को बनानेवाली एक ही हस्ती है जो सर्वशक्तिमान और सर्वाधिकार है।

ईश्वर मार्गदर्शन भेजता है

अपने सृष्टिकर्ता को पहचान लेने के बाद हम यह आशा करते हैं कि हमें अपने उद्देश्य से अवगत कराया जाए। हम कैसे जान सकते हैं कि ईश्वर हमसे क्या चाहता है ? क्या हम यहाँ किसी सज़ा या गुनाह के तौर पर रह रहे हैं या फिर किसी उद्देश्य के तहत हमें यहाँ रखा गया है। क्या हमें दूसरों का अनुसरण करते हुए इसी तरह बहाव के साथ बहते रहना है। नहीं, ईश्वर ने हमें हमारा उद्देश्य बताने के लिए दूत (नबी, पैग़म्बर) और किताबें भेजी।

ख़ुदा के पैग़म्बर (ईशदूत)

ख़ुदा ने हज़ारों पैग़म्बर (कम से कम हर कौम के अन्दर एक नबी) भेजे सबका सन्देश एक ही था कि लोगो, उसी एक ईश्वर की बन्दगी करो और उसी की आज्ञा का पालन करो। उन पैग़म्बरों में आदम, नूह, इबराहीम, मूसा,ईसा और मुहम्मद (इन सब पर ईश्वर की कृपा हो) इत्यादि शामिल हैं।

ईसा (अलै) ने भी दूसरे सभी नबियों की तरह (ख़ुदा की मर्ज़ी) से चमत्कार दिखाए , और लोगों को एक सच्चे ख़ुदा की बन्दगी की दावत दी। (क़ुरआन : 19-36)

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल)जो कि पैग़म्बरी की इस श्रृंखला की अन्तिम कड़ी है, ईमानदारी, न्याय, दयालुता और बहादुरी की बेहतरीन मिसाल है। उनको इश्वर की ओर से अन्तिम प्रकाशन (पुस्तक) क़ुरआन के साथ इसलिए भेजा गया कि वे यह बता सकें कि इस पर किस तरह अमल किया जाना चाहिए।पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल) पढ़े-लिखे नहीं थे और न ही उन्होंने किसी वैज्ञानिक क्षेत्र में कोई शिक्षा प्राप्त की थी। इस बात से सिद्ध होता है कि मुहम्मद (सल्ल) क़ुरआन के लेखक नहीं थे।

हम कैसे जानते हैं कि वास्तव में क़ुरआन ईश्वर की ओर से है?

किसी पुस्तक के ईश्वरीय होने के लिए इस बात के प्रमाण की आवश्यकता होती है कि वह वास्त में ईश्वर की ओर से है। इस्लामी पुस्तक क़ुरआन इस बात के लिए यह प्रमाण रखता है :